

याकूब की पत्नी ।

१. परमेश्वर के और प्रभु यीशु मसीह के दास याकूब की ओर से उन बारहों गोत्रों को जो तित्तर बित्तर होकर रहते हैं नमस्कार ॥

हे मेरे भाइयो जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़ो,
२ तो इस को पूरे आनन्द की बात समझो यह जान कर कि
३ तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है । पर
४ धीरज को अपना पूरा काम करने दो कि तुम सिद्ध और पूरे
हो और तुम में किसी बात की घटी न रहे ॥
पर यदि तुम में से किसी को